इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, मध्यप्रदेश–484887

हिंदी विभाग

हिंदी अध्ययन मण्डल

एम.ए.(हिंदी) हिंदी कोर पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित सेमेस्टर प्रणाली (सी.बी.सी.एस.) वर्ष 2024–2025 से प्रभावी

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

Proposed Structure of PG courses as per NEP 2020

Program	Option	Semester	Course Work	Research	Total Credit
2-Year PG Program	*Only Course Work*	1st	16** + 4#+ 4#	-	24
		2nd	12* + 4*	-	16
		3rd	20	-	20
		4th	20	-	20
	Course + Research	1st	16** + 4#+ 4#	-	24
		2nd	12* + 4*	-	16
		3rd	20	-	20
		4th	-	20	20
	Only Research	3rd	-	20	20
		4th	-	20	20
1-Y PG Program	*Only Course work*	1st	20	-	20
		2nd	20	-	20
	Course work + Research	1st	20	-	20
		2nd	-	20	20
	Only Research	1st	-	20	20
		2nd	-	20	20

The course structure of 1st and 2nd semester of 2-Y PG will be similar to the course structureof 7th and 8th semesters of 4 Y UG, respectively. 4+4 (8) additional credits will be added to the 1st semester of 2-Y PG. Likewise, the course structure of 3rd and 4th Sem of 2-Y PG will be same as the structure of 1st and 2nd Sem of 1-Y PG, respectively.

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.गा.रा.ज.जा.वि.वि.

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
(अमरकंटक, मध्यप्रदेश–484887)
हिंदी विभाग
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार एम.ए.(हिंदी) पाठ्यक्रम

Program	Semester	Course Code		Course	क्रेडिट	Total Credit
2-Y PG	1ST	1	PG HND DMT 101	साहित्य सिद्धांत और विचारधारा	4	24
		2	PG HND DMT 102	अनुसंधान पद्धति	4	
		3	PG HND DMT 103	भारतीय साहित्य	4	
		4	PG HND DMT 104	हिंदी निबन्ध	4	
		5	PG HND DMT 105	नाटक और रंगमंच	4	
		6	PG HND DMT 106	विशेष अध्ययन (कबीदास/तुलसीदास)	4	
	2ND	1	PG HND DMT 201	हिंदी आत्मकथा एवं जीवनी साहित्य	4	16
		2	PG HND DMT 202	अस्मितामूलक हिंदी साहित्य	4	
		3	PG HND DMT 203	हिन्दी सिनेमा	4	
		4	PG HND DMT 204	भारतीय काव्य शास्त्र एवं हिंदी आलोचना	4	
	3RD	1	PG HND DMT 301	हिंदी साहित्य का इतिहास	4	20
		2	PG HND DMT 302	भक्तिकालीन हिंदी कविता	4	
		3	PG HND DMT 303	आधुनिक हिंदी कविता	4	
		4	PG HND DMI 304	भाषा विज्ञान	4	
		5	PG HND DMI 305	आदिवासी हिंदी साहित्य	4	
	4TH	1	PG HND DMI 401	अनुंधान कार्य (**Research Work**)	20	20
1-Y PG	1ST	1	PG HND DMT 101	हिंदी साहित्य का इतिहास	4	20
		2	PG HND DMT 102	भक्तिकालीन हिंदी कविता	4	
		3	PG HND DMT 103	आधुनिक हिंदी कविता	4	
		4	PG HND DMIT104	भाषा विज्ञान	4	
		5	PG HND DMT 105	आदिवासी हिंदी साहित्य	4	
	2ND	1	PG HND DMI 401	अनुंधान कार्य (**Research Work**)	20	20

हिंदी अध्ययन मंडल में उपस्थित सदस्यगण

प्रो. रेनू सिंह अध्यक्ष हिंदी विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)	प्रो. विनोद कुमार मिश्र अधिष्ठाता साहित्य संकाय त्रिपुरा विश्वविद्यालय सूयमणिनगर त्रिपुरा
प्रो. आलोक श्रोत्रिय प्रोफेसर प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)	प्रो. दीपक प्रका"ा त्यागी अध्यक्ष हिन्दी विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि"वविद्यालय गोरखपुर (उ.प्र.)
प्रो. मनीषा शर्मा अधिष्ठाता संचार एवं मीडिया अध्ययन संकाय इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)	डॉ. पूनम पाण्डेय सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)
प्रो. रसाल सिंह प्रोफेसर हिन्दी विभाग किरोड़ी मल कॉलेज नई दिल्ली	

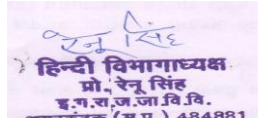

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर चयन आधारित क्रेडिट सिस्टम हिंदी पाठ्यक्रम का विज़न

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की संरचना का निर्माण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय ि"ाक्षा नीति 2020 (चयन आधारित क्रेडिट सिस्टम) शिक्षण–अधिगम प्रणाली पर केन्द्रित है। जिसमें राष्ट्रीय ि"ाक्षा नीति 2020 के लक्ष्य को केन्द्रित करते हुए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के विज़न को समाहित किया गया है।

प्रस्तुत हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम पारंपरिक हिंदी साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ उसके क्रमिक विकास की प्रक्रिया को समझने में मद्दगार साबित हो सकता है। इसी के साथ यह पाठ्यक्रम साहित्य के अंतरविषयक ज्ञान के व्यापक फलक को अपने कलेवर में समाहित करता है।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम साहित्य और समाज के विकास की अवधारणा को रेखांकित करते हुए समाज और साहित्य के समसामयिक विमर्श को भी वैज्ञानिक–वस्तुनिष्ठ दृष्टि से अवलोकन के लिए शिक्षार्थी को तैयार करता है। जिससे शिक्षार्थी न केवल अपने कौशल को संवर्द्धित कर सकते हैं बल्कि अपने अनुशासनात्मक ज्ञान को भी परिष्कृत एवं परिमार्जित कर सकते हैं और अपने जीवन को सार्थक एवं रोजगारोन्मुख बना सकते हैं।

पाठ्यक्रम निर्माण समिति
हिंदी विभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय

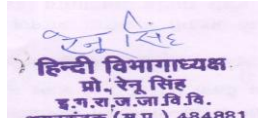

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या	PG HND DMT 101	पाठ्यक्रम	साहित्य सिद्धांत और विचारधारा
सेमेस्टर–01		क्रेडिट : 04	पूर्णांकः 100

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः

साहित्य सिद्धांत और विचारधारा की अवधारणा से परिचित कराना
साहित्य के दर्शन, विचारधारा के अंतःसंबंधों से अवगत कराना
साहित्य के विविध विधाओं और उसके सरोकारों की आलोचना, प्रवृत्ति एवं वैशिष्ट की समझ विकसित कराना
साहित्य के आस्वादन एवं आलोचना में विचारधारा के योगदान की परख करवाना

पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद विद्यार्थी यह जान पाएंगे

साहित्य आंदोलन के उदय की पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रयोजन एवं इतिहास को समझ पाएंगे ।
हिंदी साहित्य आंदोलन की सैद्धांतिकी एवं वैचारिकी को समझ पाएंगे ।
साहित्य के प्रमुख रचनाकारों एवं उनके लेखन की विविध विचाराधारात्मक पक्षों से परिचित हो सकेंगे ।
सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में विचारधारा के वैशिष्ट्य एवं सौन्दर्यबोध को परख सकेंगे ।

अध्ययन के विषयः

इस पाठ्यक्रम में इन बिन्दुओं आदिवासी का आशय, आदिवासी की अवधारणा, आदिवासी समाज का संघर्ष, आदिवासी समाज की सांस्कृतिक वैशिष्ट्य और उसका बदलता स्वरूप, समकालीन आदिवासी प्रश्न, आदिवासी दर्शन, भारतीय समाज और आदिवासी समाज, आदिवासी अस्मिता व अस्तित्व का सवाल, आदिवासी समाज के विकास की समस्याएंः चुनौतियां एवं संभावनाएं का अध्ययन अपेक्षित है। इसके आलोक में निम्न पाठ्य का अध्ययन किया जाना चाहिए।

इकाई 1. साहित्य सिद्धान्त और विचारधारा की अवधारणा

- अरस्तू का अनुकरण एवं विरेचन त्रासदी, लोंजाइनस का औदात्य, शास्त्रवाद एवं नवशास्त्रवाद, स्वछन्दतावाद,

इकाई 2.

- यथार्थवाद, अतियथार्थवाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, क्रोंचे का अभिव्यंजनावाद, रिचर्ड्स का संप्रेषण सिद्धान्त, टी.एस. इलियट का निर्वैयक्तिकता

इकाई 3.

- साहित्य समीक्षा की नव्यतम दृष्टियां–आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अंतर्विरोध(पैराडॉक्स), विखण्डन(डिकंसट्रक्शन)

इकाई 4.

- प्रतीकवाद, बिंबवाद, फैंटसी, कल्पना और मिथक

इकाई 5.

- नई समीक्षा, शैली विज्ञान समीक्षा, रूपवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, गांधीवाद एवं अम्बेडकरवाद, महर्षि अरविंद दर्शन, स्वामी विवेकानंद

सहायक ग्रंथः

- गोपीचंद नारंग : सरंचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2001
- सीमोन द बोउवार : स्त्री : उपेक्षिता, अनु, प्रभा खेतान, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली–1970
- जर्मेन ग्रीयर : विद्रोही स्त्री, अनु. मधु बी. जोशो, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001
- सुविरा जायसवालः साहित्य और विचारधारा
- ई.एच.कर –इतिहास क्या है
- नलिन विलोचन शर्मा – साहित्य का इतिहास दर्शन
- जगदीश्वर चतुर्वेदी – साहित्य का इतिहास दर्शन
- सुमन राजे – हिंदी साहित्य का आधा इतिहास

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

- अवधेश प्रधान – हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएं
- रामविलास शमा– भारतेंदु युग और हिन्दी भाषा की परंपरा
- के. दोमोरान – भारतीय चिंतन परम्परा
- रामविलास शर्मा – भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ
- रामविलास शर्मा – महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण
- मैनेजर पाण्डेय– साहित्य और इतिहास दृष्टि
- ओमप्रकाश वाल्मीकि– दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
- राजेन्द्र यादव/अर्चना वर्मा, सं.– अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य,
- महादेवी वर्मा– शृंखला की कड़ियाँ
- श्यौराज सिंह बेचैन/देवेन्द्र चौबे, सं.– चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य
- जयप्रकाश कर्दम– इक्कीसवीं सदी में दलित आंदोलन (साहित्य एवं समाज चिंतन)
- वंदना टेट– आदिवासी दर्शन, साहित्य और सौन्दर्यबोध
  – आदिवासी साहित्यः परंरपरा और प्रयोजन
- वेरिया एल्विन–मध्यकालीन भारत में आदिवासी कला
- डॉ. अम्बेडकर–डॉ. अम्बेडकर संपूर्ण वांग्मय

- वी डी गुप्ता–साहित्य का समाजशास्त्रः अवधारणाएं, सिद्धांत और पद्धति
- मैनेजर पाण्डेय–साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका
- निर्मला जैन (सं.)– साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन
- श्रीराम मेहरोत्रा–साहित्य का समाजशास्त्रः मान्यताएं एवं स्थापना
- नगेन्द्र– साहित्य का समाजशास्त्र
- पूरन जोशो–परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम
- राजेन्द्र यादव–अठारह उपन्यास, दिल्ली, 1981
- देवेन्द्र चौबे–समकालीन कहानी का समाजशास्त्र
- अभय कुमार दुबे (सं.)–भारत का भूमंडलीकरण
- धीरूभाई सेठ–सत्ता और समाज
- गेल ओम्बेट–दलित दृष्टि

पत्रिकाए :

विशेषांक :'हंस' – सत्ता विमर्श और दलित, अगस्त 2004,
'वसुधा' – दलित विशेषांक, अंक–58
आलोचना नवांक 20 1972
आलोचना नवांक 25 1973
नई धारा– 1984–85

Escarpit Robert - Sociology of Literature, London, 1965
Laurenson, Diana and Swingwood, alan - Sociology of Literature, London, 1972
Hall, John- Sociology of Literature, London, 1979
Burns Tom and Elizabeth (ed) - Sociology of Literature and Drama, London, 1973
Goldmann, Lucien- The Hidden God, London, 1964
Goldmann, Lucien- Towards A Sociology of Novel, London, 1976
Swingwood, Alam- The Novel and Revolution, London, 1975
Zeraffa, Michol- Fictions: The Novel and Social Reality, London, 1976
Lowenthal, Leo- Literature and the image of man, Buslon, 1975
Williams, Raymond- The Long Revolution, London, 1961
Williams, Raymond- Writing in Society, London, 1984
Wolff, Janet- The Social Production of Art, London, 1981
Ward, J.P.- Poetry and Sociological Idea, London, 1981
Symonds, J.- Bloody Murder, London, 1974
Critical Inquiry – Spring 1988
Cultural Critique, Winter 1987-88
Poetics, Vol. 12, No. 4-5, 1983
Poetics, Vol. 14, No. 1-2, 1983
TELOS No. 45, Fall 1980

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र) 484887

पाठ्यक्रम संख्या	PG HND DMT 102	पाठ्यक्रम	अनुसंधान पद्धति
सेमेस्टर–01	सैद्धांतिकी	क्रेडिट : 04	पूर्णांकः 100

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः

अनुसंधान की अवधारणा से परिचित कराना
अनुसंधान पद्धति, प्रविधि एवं प्रक्रिया के तत्त्वों से अवगत कराना
अनुसंधान पद्धति के विविध प्रद्धति, प्रविधि और उसके सरोकारों की आलोचना, प्रवृत्ति एवं वैशिष्ट की समझ विकसित कराना
साहित्य के विकास में अनुसंधान पद्धति के योगदान से परिचित कराना

पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद विद्यार्थी यह जान पाएंगे

अनुसंधान पद्धति की पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रयोजन एवं इतिहास को समझ पाएंगे
हिंदी साहित्य में अनुप्रयोग अनुसंधान पद्धति की सैद्धांतिकी एवं वैचारिकी को समझ पाएंगे
अनुसंधान और आलोचना के संबंधों से परिचित हो सकेंगे
हिंदी के विकास में अनुसांधान कार्य के वैशिष्ट्य एवं सौन्दर्यबोध को परख सकेंगे
शिक्षार्थी इसके अध्ययन से न केवल अनुसंधान कार्य को वैज्ञानिकता का स्वरूप दे सकेंगे
शिक्षार्थी अपनी अनुसंधान क्षमता में संवृद्धि तथा कुशलता प्राप्त करेंगे।

अध्ययन के विषयः

प्रस्तुत पाठ्यक्रम में अनुसंधान की पद्धति, प्रविधि एवं प्रक्रिया के अनुप्रयोग एवं उसके सरोकार का अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई–1 अनुसंधान की अवधारणा

अनुसंधान क्या है? अनुसंधान : स्वरूप एवं विशेषताएं, अनुसंधान और आलोचना

इकाई–2 अनुसंधान पद्धतिः अवधारणा और स्वरूप

अनुसंधान प्रविधिः आशय और आवश्यकता, अनुसंधान प्रविधिः स्वरूप एवं विशेषताएं, अनुसंधान के प्रकार, हिंदी में अनुसंधान का आरंभ

इकाई–3 अनुसधान का व्यवहारिक पक्षः

अनुसंधान के क्षेत्र, साहित्यिक अनुसंधान की विशेषताएं सामग्री–संकलन और वि"लेषण, अनुसंधान विषय का चयन, अनुसंधान और तथ्य वि"लेषण, अनुसंधान और उपसंहार/निष्कर्ष, संदर्भ ग्रंथसूची, अनुक्रमणिक, उद्धरण की विधियाँ

इकाई–4 अनुसंधान पद्धतिः समस्याएं और चुनौतियाँ

अनुसंधान–संबंधी समस्याएं, शोधार्थी के गुण, अनुसंधान की गुणवत्ता, हिंदी में अनुसंधान की दशा और दिशा, अनुसंधान पत्र/प्रबंध लेखन की मूल अवधारणाएं, अनुसंधान सार लेखन, अनुसंधान लेखन का प्रारूप, अनुसंधान लेखन में कम्प्यूटर की भूमिका; डिजिटल फॉर्म में अनुसंधान पत्र लेखन।

इकाई–5 अनुसंधान और कम्प्यूटर अनुप्रयोग

अनुसंधान में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग, सूची इंजन, पावर, ज्वांइट, तुलनात्मक अनुसंधान की समस्याएँ, ग्राफ, मॉडुल बनाना।

प्रायोगिक :

दिए गये पाठ्यक्रम के आधार पर प्रायोगिक कार्य सम्पादित किया जायेगा। जिसे अधिन्यास (असाइन्मेंट) और प्रस्तुतिकरण पत्र के रूप में छात्र प्रस्तुत करेंगे।

सहायक ग्रंथः

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.गा.रा.ज.जा.वि.वि.

सावित्री सिंहा– अनुसंधान का स्वरूप
डॉ सावित्री सिन्हा : अनुसंधान की प्रक्रिया
विनय मोहन शर्मा : अनुसंधान प्रविधि
डॉ देवराज उपाध्याय : साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान
सं0 अमियदेव–ि"ा"ार : कम्पैरेटिव लिटरेचर : थ्यौरी एण्ड प्रैक्टिस
इन्द्रनाथ चौधरी : तुलनात्मक साहित्य की भूमिका
वी. के. गोकाक : दी कंसेप्ट ऑफ इंडियन लिटरेचर
सं0 ए0 पोद्दार : इंडियन लिटरेचर
रेने वेलेक : डिस्क्रिमिन"ानस
रेने वेलेक : कंसेप्ट आफ क्रिटिसिज्म
आर. के. धवन (सं0) : कम्पैरिटिव लिटरेचर ऑफ थ्यौरी
नगेन्द्र, (सं0) : तुलनात्मक साहित्य
सं0 न्यूटन पी. स्टालनेख्त : कम्पैरेटिव लिटरेचर : मेथड एण्ड हॉर्स्ट फ्रेन्ज पर्सपेक्टिव
उलरिख वेइस्तेइन : कम्पैरेटिव लिटरेचर एण्ड लिटरेरी थ्योरी
रेनेवेलक : आलोचना की अवधारणाएँ
बी0 एम0 जैन– रिसर्च मेथेडॉलॉजी
डॉ नगेन्द्र, (सं0) : कम्पैरेटिव लिटरेचर
एस0 एन0 गणे"ान : अनुसंधान प्रविधि : सिद्धांत और प्रक्रिया
सं. भ. ह. राजूरकर/ राजमल बोरा : हिन्दी अनुसंधान का स्वरूप
डॉ नगेन्द्र : अनुसंधान और सिद्धांत
डा. तिलक सिंह : नवीन अनुसंधान विज्ञान

पाठ्यक्रम संख्या	PG HND DMT 103	पाठ्यक्रम	भारतीय साहित्य
सेमेस्टर–01	सैद्धांतिकी	क्रेडिट : 04	पूर्णांकः 100

उदेश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- भारतीय साहित्य की अवधारणा से परिचित कराना।
- चयनित रचनाओं के अध्ययन द्वारा भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को समझना।
- साहित्य के माध्यम से भारतीयता का निर्माण करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- भारतीय साहित्य की अवधारणा और उसके अध्ययन की समस्याओं को रेखांकित कर पाएंगे।
- भारतीय साहित्य की श्रेष्ठ विधाओं का अस्वादन और विश्लेषण कर सकेंगे।
- साहित्य के माध्यम से भारत की भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता की समझ सकेंगे।
- भारतीय भाषाओं एवं साहित्य में अनुवाद के महत्व को समझ सकेंगे।

इकाई 01

- भारतीय भाषाएँ और साहित्य
- भारतीय साहित्य की अवधारणा, स्वरूप और विशेषताएँ
- भारतीय साहित्य का अध्ययन : आवश्यकता एवं महत्व
- भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं
- भारतीय साहित्य एकता एवं समानता के तत्व

इकाई 02

- भारतीय भक्ति–आन्दोलन : दार्शनिक आधार, साहित्य और धाराएँ
- प्रमुख भक्त, कवि और उनके काव्य साहित्य का सामान्य परिचय :
  – आण्डाल (तमिल)
  – अक्क महादेवी (कन्नड़)
  – नामदेव (मराठी)
  – चंडोदास (बांग्ला)
  – शंकर देव (असमी)
  – नरसी मेहता (गुजराती)
  – नानक (पंजाबी)

इकाई 03

- भारतीय काव्य साहित्य : पाठ एवं आलोचना

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.गा.रा.ज.जा.वि.वि.

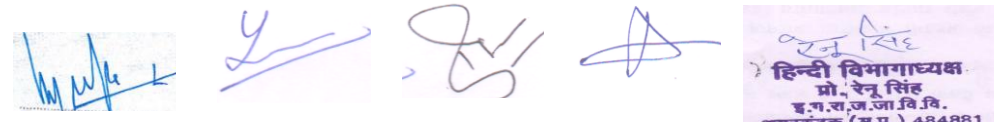

–कालिदास : रघुवंशम का प्रथम सर्ग संस्कृत
–मिर्जा गालिब (उर्दू) : गजलें : कोई उम्मीद पर नहीं आती, डर एक बात में
कहते हो कि तुम कि तू क्या है,
–रवीन्द्रनाथ ठाकुर (बांग्ला) : गीतांजली के आंरभिक पांच गीत
–कुमारन आशान (मलयालम) : चाण्डाल भिक्षुकी (चयनित अंश)
–सुब्रमण्यम भारती (तमिल) : यह है भारत देश हमारा, निर्भय
–अवतार सिंह 'पाश' (पंजाबी) : सबसे खतरनाक होता है हमारे सपनों का मर जाना, अब विदा लेता हूँ

इकाई 04

- भारतीय कथा साहित्य :
- उपन्यास : पन्नालाल पटेल (गुजराती)
  –कहानी : गोपीनाथ महांति (उड़िया)
  –बघेई, दीनानाथ आदिम (कश्मीरी) : जवाबी कार्ड (असमी)
  –कालीपट्टनम रामाराव (तेलगु) : प्राणधारा

(उपर्युक्त निर्धारित पाठ्यवस्तु से व्याख्या और उसके प्रतिपाद्य, वैशिष्ट्य तथा महत्व का आलोचनात्मक मूल्यांकन अपेक्षित होगा)

इकाई 05

- भारतीय नाट्य साहित्य :
  –विजय तेन्दुलकर (मराठी) : घासीराम कोतवाल
  –गिरीश कर्नाड (कन्नड़) : हयवदन

(उपयुक्त निर्धारित पाठ्यवस्तु से व्याख्या और उसके प्रतिपाद्य वैशिष्ट्य तथा महत्व का आलोचनात्मक मूल्यांकन होगा)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डॉ. रामविलास शर्मा : आधुनिक भारतीय साहित्य की भूमिका
- डॉ. नगेन्द्र : भारतीय वांग्मय
- अयप्पा पणिक्कर : मेडिवल इंडियन पोएट्री
- रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय
- के. सच्चिदानन्द : भारतीय साहित्य

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या **PGHND DMT 104** **पाठ्यक्रम** **हिंदी निबंध**

सेमेस्टर–01 **क्रेडिट : 04** **पूर्णांकः 100**

हिन्दी निबंध, से विद्यार्थियों को परिचित कराते हुए इन विधाओं के साहित्य एवं संस्कृति के प्रति उनकी चेतना और संवेदना का विकास करना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य हैं।

इकाई– (01)

- हिन्दी निबंध :उद्भव, विकास और विशेषताएँ पाठ एंव व्याख्या : भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है' (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' (बालकृष्ण भट्ट)
- 'कवि कर्तव्य' (महावीर प्रसाद द्विवेदी)
- 'करूणा' (रामचन्द्र शुक्ल)
- आलोचना : विवेच्य निबंध और निबन्धकार : महत्व और मूल्यांकन, निबन्ध शैली, निबन्धकार

इकाई– (02) हिन्दी निबन्ध : पाठ एवं व्याख्या

- 'देवदारू' (हजारी प्रसाद द्विवेदी), 'साहित्य का दृष्टिकोण' (मुक्तिबोध)
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र)
- 'संस्कृति का शेषनाग' (कुबेरनाथ राय)
- आलोचना : विवेच्य निबन्ध और निबन्धकार : महत्व और मूल्यांकन, निबन्ध शैली, निबन्धकार

इकाई– (04) शुक्लयुगीन निबंध साहित्य

- रामचन्द्र शुक्ल : लोभ और प्रीति, कविता क्या है? श्रद्धा और भक्ति
- सियाराम शरण गुप्त : शुष्को वृक्ष : तिष्ठति अग्रे।
- हरिशंकर परसाई इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर

इकाई– (05) शुक्लोत्तर निबंध

- जैनेन्द्र – आप क्या करते है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी–कुटज
- अज्ञेय – सभ्यता की न्यामतें

सहायक ग्रंथ–

- सत्येन्द्र तनेजा –नाटकार भारतेन्दु की रंग परिकल्पना, दिल्ली,1976
- जगदीश शर्मा –मोहन राकेश की रंगसृष्टि, दिल्ली, 1975
- गोविन्द चातक –आधुनिक नाटक का मसीहा, दिल्ली, 1975
- नेमिचन्द्र जैन (सं.)–आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, दिल्ली, 1978
- जयदेव तनेजा –समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच, दिल्ली, 1978
- नेमिचन्द्र जैन –रंगदर्शन, दिल्ली, 1967
- दशरथ ओझा –हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, दिल्ली, 1970
- हजारी प्रसाद द्विवेदी –नाट्यशास्त्र और भारतीय परम्परा, नई दिल्ली, 1971
- बच्चन सिंह – हिन्दी नाटक
- गिरी"ा रस्तोगी – हिन्दी नाटक और रंगमंच

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

पाठ्यक्रम संख्या **PGHND DMT 105** **पाठ्यक्रम** **नाटक और रंगमंच**

सेमेस्टर–01 **क्रेडिट : 04** **पूर्णांकः 100**

इकाई– (01)

- नाटक का उद्भव एवं विकास ,
- हिन्दी रंगमंच उद्भव का विकास
- नाटक और रंगमंच का अंतर्संबंध

इकाई– (02)

- नाटक के प्रमुख प्रकार और उनका रचना विधान –
- पूर्णांकी, एकांकी, लोकनाटक, प्रहसन, काव्यनाटक, नुक्कड़ नाटक, प्रतीकनाटक, भावनाटक, पाठ्यनाटक, रेडियोनाटक, टीवी नाटक।

इकाई– (03)

- हिन्दी नाट्यशास्त्र और नाट्यलेखन का इतिहास,
- नाट्यशास्त्र और भारतीय परम्परा,
- हिन्दी नाटक की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, समस्यामूलक तथा एबसर्ड नाटक।

इकाई– (04) निम्नलिखित नाटकों का मूल्यांकन एवं पाठ

- भारत दुर्दशा (भारतेन्दु हरिश्चन्द)
- ध्रुवस्वामिनी (जयशंकर प्रसाद)
- आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश)

इकाई– (05)

हिन्दी रंगमंच के प्रमुख रूप

- हिन्दी क्षेत्र की प्रसिद्ध रंगशालाएं तथा संस्थाएं।
- रंग शिल्प प्रशिक्षण, रंग स्थापत्य, रंग सज्जा, रंग दीपन, ध्वनि व्यवस्था एवं प्रसाधन, निर्देशन एवं अभिनय। रंगमंचीय भाषा की विशेषताएं।
- रंग समीक्षा का महत्त्व ।

सहायक ग्रंथ–

- सत्येन्द्र तनेजा –नाटकार भारतेन्दु की रंग परिकल्पना, दिल्ली,1976
- जगदीश शर्मा –मोहन राकेश की रंगसृष्टि, दिल्ली, 1975
- गोविन्द चातक –आधुनिक नाटक का मसीहा, दिल्ली, 1975
- नेमिचन्द्र जैन (सं.)–आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, दिल्ली, 1978

- जयदेव तनेजा –समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच, दिल्ली, 1978
- नेमिचन्द्र जैन –रंगदर्शन, दिल्ली, 1967
- दशरथ ओझा –हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, दिल्ली, 1970
- हजारी प्रसाद द्विवेदी –नाट्यशास्त्र और भारतीय परम्परा, नई दिल्ली, 1971
- बच्चन सिंह – हिन्दी नाटक
- गिरी"ा रस्तोगी – हिन्दी नाटक और रंगमंच

पाठ्यक्रम संख्या	**PGHND DMT 106**	पाठ्यक्रम	**विशेष अध्ययन** (कबीरदास)
सेमेस्टर–01		**क्रेडिट : 04**	**पूर्णांकः 100**

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निधारित साहित्यकार के जीवन और कृतित्व का समग्र आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई 01 : कबीर के अध्ययन की समस्याएं

- पारंपरिक काव्यशास्त्र और कबीर की कविता, पारंपरिक काव्य प्रतिमानों का विचार लोक के संदर्भ में, पारंपरिक प्रतिमानों की ज्ञान मीमांसा और कबीर का लोक, भक्ति आन्दोलन एवं कबीर

इकाई 02 : कबीर का काव्य व्यक्तित्व

- कबीर का कवि रूप रहस्यवाद, प्रश्नाकुशलता बनाम रहस्यवाद, आध्यात्मिक खोज और सामाजिक आलोचना, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं कबीर

इकाई 03 : कबीर की संवेदना की बनावट

- कबीर के विचार स्रोत (वैष्णव भक्ति, नाथ पंथ, इस्लाम, चार्वाक दर्शन, गुरूतत्व और स्वसंवेद्य ज्ञान) कबीर और लोक–शास्त्र का द्वंद्व, कबीर की कविता में प्रेम और भावभगति, कबीर की कविता का सामाजिक दर्शन,कबीर की नारी संवेदना

इकाई 04 : कबीर पंथ का विकास

- पथ निर्माण का ऐतिहासिक तर्क, पंथ और सामाजिक अस्मिता, कबीर पंथ का वैचारिक संन्दर्भ

इकाई 05 : निधारित पाठ्यांश की व्याख्या

- श्याम सुन्दर दास द्वारा संपादित 'कबीर ग्रंथावली' से साखी भाग–पहले ग्यारह अंक (200 साखियां) पद 40 से 50

सहायक ग्रंथ :

- हजारी प्रसाद द्विवेदी – कबीर, नयी दिल्ली, 1990
- परशुराम चतुर्वेदी – उत्तरी भारत की संत परंपरा, इलाहाबाद, 1972
- परशुराम चतुर्वेदी – कबीर साहित्य की परख, इलाहाबार, 1972

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या	**PGHND DMT 106**	पाठ्यक्रम	**विशेष अध्ययन** (तुलसीदास)
सेमेस्टर–01		**क्रेडिट : 04**	**पूर्णांकः 100**

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निधारित साहित्यकार के जीवन और कृतित्व का समग्र आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई 01 :

- भक्ति : अर्थ, स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ, सगुण भक्तिकाल उद्भव एवं विकास तथा प्रवृत्तियाँ, सगुण भक्तिकाव्य एवं तुलसीदास, रामभक्ति काव्य परम्परा और तुलसीदास, निगण–सगुण का साम्य एवं वैषम्य

इकाई 02 : रामचरित मानस (गीता–प्रेस) अयोध्याकाण्ड –

- आरंभिक 15–35 तक चौपाई। तुलसीदास का कविरूप साहित्यिक महत्व, तुलसीदास की भावुकता, आश्रय–प्रेम, तुलसीदास की दार्शनिकता

इकाई 03 : रामचरित मानस (गीता–प्रेस) उत्तरकाण्ड –

- आरंभिक 01–15 एवं 62–75 तक चौपाई। उत्तरकाण्ड का महत्व, रामराज्य की अवधारणा, कलिकाल वर्णन का महत्व, उत्तरकाण्ड में वर्णित समस्याएँ, तुलसीदास की यथार्थ चेतना, युगीन सन्दर्भ और तुलसीदास

इकाई 04 :

- विनय पत्रिका (गीता प्रेम) पद– 41, 42, 43, 44, 52, 54, 58, 63, 65, 67, 68, 72, 74, 76, 77, (कुल–15 पद), विनय पत्रिका का महत्व, तुलसीदास की भक्ति भावना, काव्यादर्श, भाषा, विनयपत्रिका का शिल्पगत वैशिष्ट्य

इकाई 05 :

- कवितावली (15 पद)– (गीता–प्रेस) बालकाण्ड पद 1, 3, 9, 10, 14, 15, 16, 18, 19, 20, लंकाकाण्ड – 63, 64, उत्तरकाण्ड – 72, 73, 77,। काव्य–कला, काव्यादर्श, कवितावली का महत्व, यथार्थ–चेतना, शिल्पगत विशेषताएँ।

सहायक ग्रंथ :

- उदयभानु सिंह 'तुलसी काव्य मीमांसा 'राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–'तुलसीदास' काशी नागरी प्रचारिणी सभा
- विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी–लोकवादी तुलसी राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
- उदयभानु सिंह 'तुलसी' दर्शन मीमांसा
- रामचन्द्र तिवारी, 'तुलसी' वाणी प्रकाशन दिल्ली
- विनोद शाही 'तुलसी' आधार प्रकाशन, पंचकूला
- परशुराम चतुर्वेदी – उत्तरी भारत की संत परंपरा, इलाहाबाद, 1972
- परशुराम चतुर्वेदी – कबीर साहित्य की परख, इलाहाबार, 1972

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या	PG HND DMT 201	**पाठ्यक्रम**	**हिंदी आत्मकथा एवं जीवनी साहित्य**
सेमेस्टर–02	**सैद्धांतिकी**	**क्रेडिट : 04**	**पूर्णांकः 100**

पाठ्यक्रम लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप स्नाकोत्तर स्तर पर छात्रों को आत्मकथा का ज्ञान प्रदान।
- हिंदी साहित्य में आत्मकथा के शिक्षण के द्वारा छात्रों में सृजन–अभिरूचि का विकास करना।
- हिंदी के मूल पाठ को बढ़ावा देना
- हिंदी भाषा कौशल का विकास एवं रोजगार पटक अध्ययन।

अधिगम परिणाम : Learning Out Comes

- इस प्रश्न–पत्र के अध्ययन के उपरान्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता सिद्ध होगी।
- आत्मकथा के माध्यम से छात्र हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों को उनके जीवन को, उनकी कृतियों को भली–भांति प्रकार से जान सकेगें।
- आत्मकथा के सृजन करने वाला लेखक अपने विविध साहित्यिक आयामों को, उपलब्धियों को विविध कार्य क्षेत्रों को स्पष्ट करता है।

इकाई : 01

- आत्मकथा का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, आत्मकथा का इतिहास एवं लेखन की परंपरा, आत्मकथा के तत्व और विशेषताएं।

इकाई : 02

- आत्मकथा का वैश्विक परिदृश्य, हिन्दी की आरंभिक आत्मकथाएं एवं उनका विकास।

इकाई : 03

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र : कुछ आप बीती, कुछ जग बीती
- राहुल सांकृत्यायन : मेरी जीवन यात्रा
-

इकाई : 04

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी आत्मकथायें : स्वरूप एवं वैशिष्ट्य

- हरिवंश राय बच्चन : क्या भूलूँ क्या याद करूँ
- प्रभा खेतान : अन्या से अनन्या

इकाई :05

जीवनी साहित्य

- रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना, भाग एक
- विष्णु प्रभाकर : आवारा मसीहा

सहायक ग्रंथ सूची –

- दयानन्द सरस्वती – जीवन चरित्र (1860)
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – कुछ आप बीती कुछ जग बीती
- महात्मा गांधी –सत्य के प्रयोग (1930)
- रामविलास शुक्ल – म क्रांन्तिकारी कैसे बना 1930)
- भवानी दयाल संन्यासी – प्रवासी की कहानी 1939)
- श्यामसुन्दरदास – मेरी आत्मकहानी 1941)
- गुलाब राय – मेरी असफलताएं
- राहुल सांकृत्यायन – मेरी जीवनयात्रा 1946)
- राजेन्द्र प्रसाद – आत्मकथा (1947)

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

- वियोगी हरि – मेरा जीवन प्रवाह (1951)
- भवानी दयाल सन्यासी – प्रवासी की आत्मकथा (1947)
- सत्यदेश परिव्राजक – स्वतंत्रता की खोज में
- यशपाल – सिंहावलोकन (1951)
- पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र –अपनी खबर (1960)
- राजेन्द्र यादव – मुड़–मुड़ कर देखता हूँ (2001)
- भगवती चरण वर्मा – कहि न जाए का कहिए
- भीष्म साहनी – आज के अतीत (2003)
- कन्हैयालाल नन्दन – गुजरा कहां – कहां से (2007)
- रामकमल राय – एक अन्तहीन की तलाश, सहचर है समय (1991)
- शिवपूजन सहाय – मेरा जीवन (1985)
- अमृतलाल नागर – टुकड़े टुकड़े दास्तान (1986)
- डॉ. नगेन्द्र – अर्धकथा (1988)
- रेणु – आत्मपरिचय (1988)
- कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर – तपती पगडंडियों पर पदयात्रा (1989)
- कमलेश्वर – जो मैने जिया (1992)
- लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी – मैं हिजड़ मैं लक्ष्मी (2015)

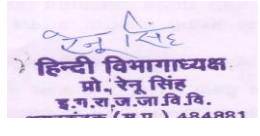

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र) 484887

पाठ्यक्रम संख्या	PG HND DMT 202	पाठ्यक्रम	अस्मितामूलक हिंदी साहित्य
सेमेस्टर–02		क्रेडिट : 04	पूर्णांकः 100

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य अस्मिता मूलकविमर्श विषयक साहित्य से छात्रों को परिचित कराते हुए उनमें विभिन्न सामाजिक अस्मिताओं के जीवन से सम्बंधित प्रश्नों समस्याओं और साहित्यिक मूल्यों के प्रति समझ का विकास करना है

इकाई 01

- अस्मिता की अवधारणा, अस्मिता विमशों की सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि,
- अस्मिता विमर्शों का वैश्विक सन्दर्भः नीग्रो आन्दोलन, स्त्री मुक्ति आन्दोलन, उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलन

इकाई 02

व्याख्या खंड

- कविताएँ : ठाकुर का कुआँ (ओमप्रकाश वाल्मीकि), तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती (कमल भारती), सुनो ब्राह्मण (मलखान सिंह), वजूद है (रजनी तिलक),
- कहानी : श्योराज सिंह बचैन रावण (कहानी), सुशीला टाकभौरे– सिलिया (कहानी), सूरजपाल चौहान नया ब्राह्मण (कहानी),
- आत्मकथा – तुलसीराम–मुर्दहिया (पहला खण्ड–भुतही पारिवारिक पृष्ठभूमि)

आलोचना खंड

- दलित साहित्य के दार्शनिक और वैचारिक आधार, स्वाधीनता आन्दोलन एवं दलित मुक्ति के प्रश्न अम्बेडकरवाद और मार्क्सवाद, दलित स्त्रीवाद, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र

(निर्धारित पाठ्य वस्तु से व्याख्या प्रतिपादय महत्त्व एवं मूल्यांकन)

इकाई 03

व्याख्या खंड

कविता : गगन गिल प्रेम तो नहीं है यह लड़की, 'अनामिका'–'सृष्टि', नीलेश रघुवंशी – 199 सत्रह साल की लड़की '

कहानियां– कहानी :

- ममता कालिया – बोलने वाली औरत
- नासिरा शर्मा – खुदा की वापसी
- अनीता भारती – एक थी कोटेवाली
- आत्मकथा प्रभा खेतान अन्या से अनन्या (आरंभिक एक अंश)

आलोचना खण्ड

- पितृसत्ता की अवधारणा, स्त्री मुक्ति आन्दोलन का इतिहास, दार्शनिक सरणियाँ और स्त्री मुक्ति, भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और मुक्ति के प्रश्न, स्त्री मुक्ति की समकालीन– वैश्विक एवं भारतीय अवधारणाएं और साहित्य (उत्तर आधुनिक और उत्तर औपनिवेशिक)

(निर्धारित पाठ्य वस्तु से व्याख्या प्रतिपादद्य महत्त्व एवं मूल्यांकन)

ईकाई 04

व्याख्या खंड

कविता :

- कथन शालवन के अंतिम शाल की (रामदयाल मुंडा),
- अगर तुम मेरी जगह होते (निर्मला पुतुल),
- उपन्यास – धूणो तपे तीर (हरिराम मीना)

आलोचना खण्ड :

- आदिवासी एवं आदिवासियत की अवधारणा, आदिवासी जीवन दर्शन एवं संस्कृति, जल, जंगल–जमीन और पर्यावरण का सवाल, भाषा, बिम्ब और प्रतीक,

(निर्धारित पाठ्य वस्तु से व्याख्या प्रतिपादय महत्त्व एवं मूल्यांकन)

इकाई 05

व्याख्या खण्ड :

- राही मासूम रजा – टोपी शुक्ला
- स्वयं प्रकाश – पार्टीशन (कहानी)

आलोचना खण्ड :

- अल्पसंख्यक की अवधारणा, पहचान के भाषाई और धार्मिक आधार, बौद्ध, सिख और मुस्लिम अल्पसंख्यकों के प्रमुख सवाल विभाजन की त्रासदी और अल्पसंख्यक साहित्य, सांस्कृतिक बहुलता के बीच सांप्रदायिक उलझने, कौमी एकता की अभिव्यक्ति
  (निर्धारित पाठ्य वस्तु से व्याख्या प्रतिपाद्य महत्त्व एवं मूल्यांकन)

सहायक ग्रंथ

- अभय कुमार दुबे (संम्पादक) आधुनिकता के आइने में दलित, वाणी प्रकाशन दिल्ली
- ओम प्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- केवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका इतिहस बोध प्रकाशन इलाहाबाद
- तेजस्वी कट्टीमनी भारतीय दलित साहित्य : एक परिचय वाल्मीकि पब्लिशर्स नई दिल्ली
- बाबूराव बाबुल दलित साहित्य : उद्देश्य और वैचारिकता, दलित साहित्य प्रकाशन, नागपुर
- राम नरेश रामः दलित स्त्रीवाद की आत्मकथात्मक अभिव्यक्ति, नयी किताब प्रकाशन, दिल्ली
- निवेदिता मैनन साधना आय नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे
- अनामिका स्त्रीत्व का मानचित्र
- सुधा सिंह ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ
- व्होरा : नारी शोषण आईने और आयाम, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली
- मृणाल पाण्डेयरू देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- राजकिशोर (सं): स्त्री के लिए जगह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- सरला माहेश्वरी नारी प्रश्न, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- वंदना टेटे : आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन
- वंदना टेट आदिवासी दर्शन और साहित्य
- गंगासहाय मीणा आदिवासी चिंतन की भूमिका
- रमणिका गुप्ता आदिवासी कौन?
- जयपाल सिंह मुंडा : लो बिर सेंदरा
- संपा. कलिका प्रसादः वृहद हिंदी कोश :
- डॉ. अर्जुन चव्हाण विमर्श के विविध आयाम
- डॉ. एम. फिरोज खान : मुस्लिम विमर्श : साहित्य के आईने में

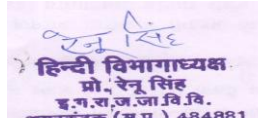

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र.)484887

पाठ्यक्रम संख्या	**PG HND DMT203**	**पाठ्यक्रम**	**हिन्दी सिनेमा**
सेमेस्टर–02	**सैद्धांतिकी**	**क्रेडिट : 04**	**पूर्णांकः 100**

इस पाठ्यक्रम में समाज और संस्कृति के संदर्भ में सिनेमा का आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

इकाईः1

- सिनेमा : स्वरूप और विकास
- हिन्दी सिनेमा का इतिहास
- सिनेमा के विविध प्रकार
- लोकप्रिय सिनेमा, कलात्मक एवं सामान्तर सिनेमा, बाल सिनेमा डॉक्यूमेंट्री

इकाईः2

- हिन्दी सिनेमा और साहित्य
- हिन्दी सिनेमा की वैचारिकी
- सिनेमा : संवेदना और सरोकार
- साहित्य और सिनेमा अंतःसंबंध
- भारतीय सिनेमा और साहित्यक कृतियाँ

इकाईः 3

- सिनेमा और समाज
- सिनेमा और समाज का अंतःसंबंध
- समाज पर सिनेमा का बढ़ता प्रभाव और बढ़ती चुनौतियां
- सिनेमा और संस्कृति
- कला बनाम सिनेमा का सवाल

इकाईः 4

- सिनेमा की भाषा एवं सम्प्रेषण
- पटकथा लेखन
- संवाद लेखन
- गीत लेखन

इकाईः 5

- हिंदी सिनेमा और नयी तकनीक– संभावनाएं और चुनौतियां , वैश्वीकरण का परिप्रेक्ष्य और सिनेमा

(संदर्भ और समीक्षा : मुगले आजम, मदर इंडिया, ओ माई गॉड, दोस्ती (पुरानी), देवदास, रश्मि रॉकेट, **08.A.M. Metro** पीके, रंगरसिया, चक्रव्यूह, थ्री इडिएट, भारत एक खोज, श्रीकांत कालिक वाटर, पींक, गोदान, सद्गति, सूरज का सातवां घोड़ा, पेनॉल्टी कॉर्नर, द लास्ट बहुरूपिया, न्यूटन, आर्टिकल–15)

सहायक ग्रंथ :

- फिल्मनिर्देशन : कुलदीप सिन्हा
- हिन्दी सिनेमा का इतिहास–मनमोहन चड्ढा
- नया सिनेमा–ब्रजेश्वर मदान
- भारतीय सिने सिद्धान्त–अनुपम ओझा
- सिनेमा : कल, आज, कल– विनोद भारद्वाज
- हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष–प्रकाशन विभाग
- हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष–प्रहलाद अग्रवाल
- राजकपूर : आधी हकीकत, आधा फसाना– प्रहलाद अग्रवाल
- सिनेमा का जादुई सफर– प्रताप सिंह
- नौशाद : ज़र्रा जो आफताब बना– ज़िया इमाम
- सिनेमा के बारे में जावेद अख्तर से बातचीत– नसरीन मुन्नी कबीर
- गुरूदत्त–विमल मित्र
- सत्यजीत रे–महेन्द्र मिश्र
- कैमरा मेरी तीसरी आंख – राधू कर्माकर
- धुनों की यात्रा –पंकज राग
- सिनेमा एक सफरनामा– डॉ. एस. आर. जयश्री
- दलित–आदिवासी सिनेमा– डॉ. प्रमोद कुमार मीणा

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या	PG HND DMT 204	पाठ्यक्रम	भारतीय काव्यशास्त्र एवं हिंदी आलोचना
सेमेस्टर–02		क्रेडिट : 04	पूर्णांकः 100

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

भारतीय काव्यशास्त्र के विकासक्रम से परिचित कराना।
भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों से अवगत कराना।
साहित्य का आस्वादन एवं समीक्षात्मक दृष्टि विकसित कराना।

पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद विद्यार्थी यह जान पाएंगे

काव्य–लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार और विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी होगी।
संस्कृत के प्रमुख काव्यशास्त्रियों –आलोचकों की साहित्य विषयक मान्यताओं को समझ पाएंगे।
प्रमुख साहित्यिक वादों को समझ पाएंगे।
शिक्षार्थी काव्यशास्त्र की परंपरा और विभिन्न दृष्टियों से परिचित होंगे।

अध्ययन का विषयः

काव्यशास्त्र का इतिहास– प्रस्थान और प्रमुख परिवर्तन बिन्दु, प्रमुख आचार्य और काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय, नागरिक, सामाजिक और सहृदय की भूमिका, काव्य के स्वरूप सम्बन्धी मत–काव्य सृजन पक्ष और प्रतिभा, काव्यस्वाद का पक्ष और साधारणीकरण, रस की अवधारणा, ध्वनि विचार, लक्षणा और अलंकार, संस्कृत काव्यशास्त्र की प्रसंगानुकूलता और प्रासांगिकता पर चर्चा अध्ययन की दृष्टि से अपेक्षित है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में साहित्यशास्त्र की परंपरा और उसके साहित्यिक सरोकार का अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई : 01 साहित्यशास्त्र की अवधारणाः साहित्य की परिभाषा, (साहित्य लक्षण–हेतु–प्रयोजन), वर्गीकरण–भेद(गद्य–पद्य, दृश्य–श्रव्य, रूपक, प्रबंध–मुक्तक) साहित्य तत्त्व– यथार्थ, कल्पना, बिम्ब, प्रतीक, साहित्य की दृष्टि– (काव्यशास्त्रीय, मार्क्सवादी)

इकाई : 02 शब्द शक्ति– परिभाषा, भेद, वर्गाकरण, ध्वनि सिद्धांत

- रस की परिभाषा, भेद–वर्गीकरण, तत्त्व(अंग), रसों का परिचय, रस–स्वरूप, साधारणीकरण, रस सिद्धांत

इकाई : 03

- अलंकार– परिभाषा, भेद–वर्गीकरण, अलंकारों का परिचय, –अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा,
- समासोक्ति, दीपक, मानवीकरण, उत्प्रेक्षा, अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत
- छन्द– परिभाषा, भेद–वर्गीकरण, छंद के अंग, छंदों का परिचय–(इन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, मंदाक्रांता, हरिगीतिका, गीतिका, आल्हा, रोला, सोरठा, दोहा, छप्पय, सवैया) औचित्य सिद्धांत

इकाई : 04 हिंदी आलोचना : उदभव और विकास

- रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्द दुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र

इकाई : 05 हिंदी आलोचनाः विविध आयाम एवं चिन्तन का नया स्वरूप

- डॉ. राम विलास शर्मा , डॉ. नामवर सिंह, डॉ. मैनेजर पाण्डेय, अज्ञेय, मुक्तिबोध, देवी शंकर अवस्थी, विजय देव नारायण साही

प्रायोगिक : दिए गये पाठ्यक्रम के आधार पर प्रायोगिक कार्य सम्पादित किया जायेगा जिसे अधिन्यास (असाइन्मेंट) और प्रस्तुतिकरण पत्र के रूप में छात्र प्रस्तुत करेंगे।

अनुमोदित ग्रंथः

- भारतीय साहित्यशास्त्र – गणेश–त्रयंबक देशपांडे, पापुलर बुक डिपो, पूना
- रसमीमांसा – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- संस्कृत आलोचना – बलदेव उपाध्याय
- रस प्रक्रिया – शंकर देव अवतरे, दिल्ली
- हिस्ट्री आफ संस्कृत पोएटिक्स – पी0 बी0 काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
- भारतीय काव्यशास्त्र क नए क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धांत – भोलाशंकर व्यास, चौखंभा, वाराणसी
- काव्यशास्त्र – भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- रस सिद्धांत– नगेन्द्र
- रामविलास शर्मा– आचार्य रामचंद्र शुक्ल ओर हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1993
- नामवर सिंह– दूसरी परंपरा की खोज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982
  – इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1968
- मैनेजर पाण्डेय– साहित्य और इतिहास दृष्टि, पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली, 1981
- मलयज– रामचंद्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1987
- विश्वनाथ त्रिपाठी– हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1992
- बच्चन सिंह– हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1994
- शिवप्रसाद सिंह– शांतिनिकेतन से शिवालिक, नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ली, 1988
- गजानन माधव मुक्तिबोध– समीक्षा की समस्याएँ, रचनावलो भाग–5, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1980
- मुक्तिबोध– कामायनी : एक पुनर्विचार ',रचनावली भाग–6, राजकमल, दिल्ली, 1980
- मुक्तिबोध– नयी कविता का आत्मसंघर्ष,' रचनावली भाग–6, वही
- रेने वेलेक, अनु इंद्रनाथ मदानः आलोचना की धारणाएं, हरियाणा हिन्दी ग्रंथ अकादमी, चण्डीगढ़, 1978
- मैनेजर पाण्डेय– शब्द और कर्म, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1997
- नंददुलारे वाजपेयी– हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, लोकभारती, इलाहाबाद, 1983
- नंददुलार वाजपेयी'– नया साहित्य : नये प्रश्न, वही, 1955
- पुरूषोत्तम अग्रवाल– तीसरा रूख, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली,1996
- वीरभारत तलवार– रस्साकशी, सारांश प्रकाशन, दिल्ली, 2002
- मुरली मनोहर प्रसाद सिंह– आधुनिक हिन्दी साहित्य : विवाद और विवेचना, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, 2000
- देवेंद्र चौबे– आलोचना का जनतंत्र, आधार प्रकाशन, पंचकुला, 2011
- कमला प्रसाद– आलोचक और आलोचना, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2002

- रामविलास शर्मा– आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1993
- नामवर सिंह– दूसरी परंपरा की खोज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1982
  – इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1968
- मैनेजर पाण्डेय– साहित्य और इतिहास दृष्टि, पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली, 1981
- मलयज– रामचंद्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1987

- विश्वनाथ त्रिपाठी– हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1992
- बच्चन सिंह– हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1994
- शिवप्रसाद सिंह– शांतिनिकेतन से शिवालिक, नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ली, 1988
- गजानन माधव मुक्तिबोध– समीक्षा की समस्याएँ, रचनावली भाग–5, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1980
- मुक्तिबोध – कामायनी : एक पुनर्विचार ',रचनावली भाग–6, राजकमल, दिल्ली, 1980
- मुक्तिबोध– नयी कविता का आत्मसंघ"र्ा,' रचनावली भाग–6, वही
- रेने वेलेक, अनु इंद्रनाथ मदानः आलोचना की धारणाएं, हरियाणा हिन्दी ग्रंथ अकादमी, चण्डीगढ़, 1978
- मैनेजर पाण्डेय– शब्द और कर्म, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1997
- नंददुलारे वाजपेयी– हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, लोकभारती, इलाहाबाद, 1983
- नंददुलारे वाजपेयी'– नया साहित्य : नये प्रश्न, वही, 1955
- पुरूषोत्तम अग्रवाल– तीसरा रूख, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली,1996
- वीरभारत तलवार– रस्साकशी, सारांश प्रकाशन, दिल्ली, 2002
- मुरली मनोहर प्रसाद सिंह– आधुनिक हिन्दी साहित्य : विवाद और विवेचना, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, 2000
- देवेंद्र चौबे – आलोचना का जनतंत्र, आधार प्रकाशन, पंचकुला, 2011
- कमला प्रसाद– आलोचक और आलोचना, आधार प्रकाशन, पंचकुला, 2002

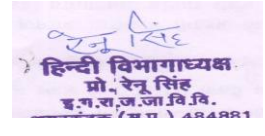

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या : PG HND DMT 301 पाठ्यक्रम : हिंदी साहित्य का इतिहास

सेमेस्टर– 03 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

पाठ्यक्रम लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- छात्रों को हिंदी साहित्य के इतिहास से, परंपरा से अवगत कराना।
- हिंदी साहित्य साहित्यकारों एवं रचनाकारों का ज्ञान प्रदान करना।
- छात्रों मे साहित्यिक सृजन का विकास करना।

अधिगम परिणाम : Learning Out Comes

- हिंदी साहित्य के इतिहास के माध्यम से विभिन्न कालखण्डों के बारे में छात्रों को जानकारी देना।
- विभिन्न काल खण्डो के माध्यम से वैचारिक आन्दोलन को बताना।
- छात्रों में लेखन की कला का विकास करना जिससे उन्हों रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके।

इकाई– (1) इतिहास और साहित्य की अवधारणा

इतिहास क्या है, इतिहास और साहित्य का अंतःसंबंध, साहित्य का इतिहास दर्शन, हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा, हिंदी साहित्यः काल विभाजन एवं नामकरण आदिकाल के प्रमुख कवि और उनका काव्य, आदिकाल का नामकरणः समस्याएं एवं संभावनाएं, आदिकाल की पृष्ठभूमि (सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और साहित्यिक),एवं साहित्यिक प्रवृत्तियां, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य

इकाई– (2) भक्तिकाल

भक्ति आंदोलनः उदय, पृष्ठभूमि (सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और साहित्यिक) एवं स्वरूप, भक्ति आंदोलन की दार्शनिक विचार धाराएं, भक्तिकाल की धाराएं निर्गुण धारा और सगुण धारा, भक्तिकाल के प्रमुख कविः रचनाएं और उनकी साहित्य की संवेदनाएं, भक्तिकालीन कविता का वैचारिक पक्ष–स्त्री एवं वंचित समुदाय के प्रति

इकाई–(3) रीतिकाल

रीतिकाल का समय सीमा एवं नामकरण, रीतिकाल की युगीन पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां (सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और साहित्यिक), रीतिकालीन काव्यधाराएं एवं काव्य प्रवृत्तियां, रीतिकालीन प्रमुख कविः रचनाएं और उनकी साहित्य की संवेदनाए

इकाई–(4) आधुनिकता और भारतीय नवजागरण की अवधारणा

भारतीय नवजागरणः परिस्थितियां और आंदोलन (राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले), हिंदी नवजागरणः भारतेंदु पूर्व हिन्दी गद्य, आधुनिकता और आधुनिकबोध, आधुनिकता और हिंदी साहित्य, 1857 की क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतेंदुयुगीन साहित्य की प्रवृत्तियां, भारतेंन्दु हरिश्चंद्र और उनका मंडल, 19वीं 'ताब्दी में हिन्दी की प्रमुख पत्र–पत्रिकाएं, खड़ीबोली आंदोलनः महावीर प्रसाद द्विवेदी, द्विवेदीयुगीन साहित्य की प्रवृत्तियां, स्वाधीनता आंदोलनः राष्ट्रीय चेतना, और साहित्यिक प्रवृत्ति।

इकाई–(5) आधुनिक हिंदी साहित्य

आधुनिक काव्य अनुशीलन : परिवेश, प्रवृत्तियां और संवेदना

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी पर उसका प्रभाव, हिन्दी में स्वच्छंदत्तावादी प्रवृत्ति का उदय और विकास, छायावाद, एवं अन्य काव्य आन्दोलन

हिंदी गद्य साहित्य : परिवेश, प्रवृत्तियां और संवेदना

उपन्यास, कहानी, हिंदी आलोचना, नाटक, निबंध तथा अन्य गद्य साहित्यिक विधाएं एवं आन्दोलन स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य और विचारधारा : व्यक्तिस्वातत्र्य, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, मनोश्लि"णवाद, अम्बेडकरवाद आदि, नई कहानी

समकालीन हिन्दी साहित्य– कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में नयी प्रवृत्तियों का उदय, समकालीन विमर्शमूलक साहित्य का इतिहासलेखनः एक सामान्य परिचय (विशेष संदर्भः दलित, स्त्री और आदिवासी), समकालीन हिन्दी साहित्य की विषे"ताएं।

सहायक ग्रंथः

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल–हिंदी साहित्य का इतिहास

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

- हजारीप्रसाद द्विवेदी–हिंदी साहित्य की भूमिका
- हजारीप्रसाद द्विवेदी–हिंदी साहित्यः उद्भव और विकास
- रामस्वरूप चतुर्वेदी–हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास
- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र– हिंदी साहित्य का अतीत
- सं. नगेन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास
- बच्चन सिंह– हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास
- ई.एच.कार – इतिहास क्या है
- रामकुमार वर्मा–हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
- गणपतिचंद्र गुप्त –हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
- विश्वनाथ त्रिपाठी–हिंदी साहित्य का सरल इतिहास
- हजारीप्रसाद द्विवेदी – हिंदी साहित्य का आदिकाल–
- साहित्य का इतिहास दर्शन– नलिन विलोचन शर्मा
- साहित्य का इतिहास दर्शन– जगदीश्वर चतुर्वेदी
- हिंदी साहित्य का आधा इतिहास– सुमन राजे
- हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएं – अवधेश प्रधान
- रामविलास शमा– भारतेंदु युग और हिन्दी भाषा की परंपरा
- प्रेमशंकर– भक्तिकाव्य की भूमिका
- के. दोमोरान – भारतीय चिंतन परम्परा
- शिवकुमार मिश्र – भक्तिकाव्य और लोकजीवन
- गोविन्द त्रिगुणायत – कबीर की विचारधारा
- मैनेजर पाण्डेय – भक्ति आंदोलन और सूरदास
- रामविलास शर्मा– भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएं
- रामविलास शर्मा– महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण
- मैनेजर पाण्डेय– साहित्य और इतिहास दृष्टि
- नंददुलार वाजपेयी– हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी
- विश्वनाथ त्रिपाठी– हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
- रामस्वरूप चतुर्वेदी– हिन्दी साहित्य और संवेदना का इतिहास
- नामवर सिंह – कविता के नये प्रतिमान
- देवीशंकर अवस्थी– विवेक के रंग
- ओमप्रकाश वाल्मीकि– दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
- राजेन्द्र यादव/ अर्चना वर्मा, सं.– अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य,
- महादेवी वर्मा– शृंखला की कड़ियां
- बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास
- श्यौराज सिंह बेचैन/ देवेन्द्र चौबे, सं.– चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य
- विजयेन्द्र स्नातक– हिन्दी साहित्य का इतिहास
- जयप्रकाश कर्दम– इक्कीसवीं सदी में दलित आंदोलन (साहित्य एवं समाज चिंतन)
- मोहनदास नैमिशराय – हिंदी दलित साहित्य
- वंदना टेट– आदिवासी साहित्यः परंपरा और प्रयोजन
- कंवल भारती– दलित साहित्य की अवधारणा
- वी कृष्णा/भीम सिंह – आदिवासी विमर्श

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या : **PGHND DMI 302** पाठ्यक्रम : **भक्तिकालीन हिंदी कविता**

सेमेस्टर– 03 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

पाठ्यक्रम लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों का परिचय हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन काव्य और कवियो से कराते हुए उनकी संवेदना और काव्यगत विशेषताओं का बोध कराना है। इससे विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के कविया के और उनके काव्य के सम्बन्ध में विस्तृत और गहन जानकारी हो सकेगी।

इकाई–1 : (कबीरदासःसं. श्यामसुन्दरदास)
साखीःगुरूदेव कौ अंग–1,9,10,11,20
बिरह कौ अंग – 6,12,22,24,45
आलोचना – भक्ति, दर्शन, रहस्य चेतना, सामाजिक चेतना, सौन्दर्य महत्व
मलिक मोहम्मद जायसी : (जायसी ग्रन्थावलो, सं. रामचन्द्र शुक्ल)
स्तुति खण्ड – 07, सिंद्वलद्वीप वर्णन खण्ड – 18, मानसरोदक खण्ड–08
नखशिख–खण्ड–01,02, नागमती वियोग खण्ड – 05
आलोचना–प्रेम संवेदना, वियोग वर्णन, सौन्दर्य चेतना रहस्यवाद काव्यवाला
इकाई–2 सूरदास : (भ्रमरगीत सार : सं. रामचन्द्र शुक्ल) पद संख्याः 07,12,23,24,26
आलोचना – सूर का काव्य सौन्दर्य भक्ति भावना, विरह वर्णन वात्सल्य वर्णन और सौन्दर्य वर्णन
तुलसी : (श्री रामचरित मानसः तुलसीदास, गीता प्रेस) अयोध्याकाण्ड– 28 से 41 आलोचना–काव्य सौन्दर्य, भक्ति–भावना, लोकमंगल, समन्वयभावना
इकाई–3 मीरा बाई – (मीरा काव्य : सं. विश्वनाथ त्रिपाठी)
आरम्भ के 10 पद
आलोचना – भक्ति भावना, रहस्य चेतना, गीत तत्व, काव्य सौन्दर्य स्त्री संवेदना
रसखान – (रसखान रचनावली : सं. विद्यानिवास मिश्र)
सुजान रसखान : 2,3,7,10,13,18,27,55,56,73 आलोचना–भक्ति, भाव सौन्दर्य, काल सौन्दर्य
इकाई–4 केशवदास – (रीतिकाव्यधारा : सं. डा. रामचन्द्र तिवारी, डा. रामफेर त्रिपाठी)
वनमार्ग में राम–छन्द – 37 से 41 तक
आलोचना – केशवदास का आचार्यत्व, संवाद योजना, काव्य सौन्दर्य
भूषण – (रीति काव्यधारा : सं. डा. रामचन्द्र तिवारी, डा. रामफेर त्रिपाठी)
शिवाजी प्रशस्ति–छन्द 9 से 13 तक
आलोचना–काव्यगत विशेषताएं, वीर भावना, राष्ट्रीय चेतना
इकाई–5 बिहारी : (बिहारी रत्नाकर : जगन्नाथदास रत्नाकर) आरम्भ के बीस दोहे
आलोचना – काव्य सौन्दर्य, भक्ति, नीति और श्रृंगार, बहुज्ञता
घनानन्द : (आनन्दघन : सं. रामदेव शुक्ल)
आलोचना–प्रेम संवेदना, श्रृगांर–वर्णन, काव्य–कला

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- बिहारी का नया मूल्यांकन–डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- घनानन्द का काव्य – डॉ. रामदेव शुक्ल, द मैकमिलन कंपनी आप इंडिया
- सगुण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि – डॉ. विमलेश कुमार मिश्र, प्रत्यूष प्रकाशन, गाजियाबाद
- जायसी – विजय देव नारायण साही हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद 1983
- भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य'– शिव कुमार मिश्र, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद 1999
- हिन्दी साहित्य की भूमिका – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंन्थ रत्नाकर कार्यलाय बम्बई –19280
- भक्ति काव्य की भूमिका' दीपक प्रकाश त्यागी, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, 1997
- सगुण भक्तिधारा के प्रतिनिधि कवि विमलेश कुमार मिश्र, प्रत्यूष प्रकाशन गाजियाबाद

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या : **PGHND DMT 303** पाठ्यक्रम : **आधुनिक हिंदी कविता**

सेमेस्टर– 03 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम को पढ़ाते हुए कविता के विकास क्रम और काव्य संवेदना का आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई–1

– भारतेन्दु हरि"चन्द्र – रोअहूं सब मिलकै आवहूं भारत भाई, चूरन का लटका
– अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – उठो उठो वीरो चीरो अरि के करेजन को, कर्मवीर
– मैथिली शरण गुप्त – मातृभूमि विचित्र संग्राम

– माखनलाल चतुर्वेदी – कैदी और कोकिला

इकाई–2

– जय"ांकर प्रसाद – अरूण यह मधुमय दे"ा, ले चल मुझे भुलावा देकर

– सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला– जागो फिर एक बार, भिक्षुक

– सुमित्रानन्दन पंत– नौका विहार, परिवर्तन

– महादेवी वर्मा – मै नीर भरी दुःख की बदली, जीवन विरह का जलजात

इकाई–3

– अज्ञेय – कलगी बाजरे की, नदी के द्वीप, यह दीप अकेला

– मुक्तिबोध – भूल गलती, एक रंग का राग

– नागार्जुन– अकाल और उसके बाद, शासन की बंदूक, कालीदास

– शम"ोर – सूना सूना पथ है उदास झरना , वह सिलोना जिस

इकाई–4

– सुभद्रा कुमारी चौहान – वीरों का कैसा वसंत, जलियाँ वाला बाग में वसंत
– नरेश मेहता – रोज रोज, चैत्य पुरूष

– भवानी प्रसाद मिश्र – गीत फरो"ा, सतपुड़ा के जंगल कहीं नहीं बचे

– रामधारी सिंह दिनकर – मनुष्यता, समर शेष हैं

इकाई–5

– धूमिल – अकाल द"ान, मोचीराम

– केदारनाथ सिंह – सुई और तागे के बीच में, पानी की प्रार्थना

– कुंवर नारायण – आह्वान, उपरान्त जीवन

– सर्वे"वर दयाल शक्सेना – मैने कब कहा, हम ले चलेंगे।

प्रायोगिक :
दिए गये पाठ्यक्रम के आधार पर प्रायोगिक कार्य सम्पादित किया जायेगा जिसे अधिन्यास (असाइन्मेंट) के रूप छात्र प्रस्तुत करेंगे।

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

सहायक ग्रंथ :

प्रसाद का काव्य : प्रेम"ांकर
सुमित्रा नंदन पंत – नगेन्द्र
छायावाद– डॉ. नामवर सिंह
आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह
महादेवी : दूधनाथ सिंह
निराला आत्महंता आस्था – दूधनाथ सिंह
निराला की साहित्य साधना : दूधनाथ सिंह
समकालीन हिन्दी कविता : वि"वनाथ प्रसाद तिवारी
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ : रामकली सराफ
समकालीन हिन्दी कविता : तीन द"ाकः अ"ोक त्रिपाठी
समकालीनता और साहित्यः राजे"ा जो"ाी
"ाम"ोर बहादुर सिंह– दोआब
गजानान माधव मुक्तिबोध– कामायनी : एक पुनर्विचार
रामविलास "ार्मा– निराला की साहित्य साधना
दूधनाथ सिंह–निराला : एक आत्महन्ता आस्था
ई0 पी0 चेलि"ाव– सुमित्रानन्दन पन्त तथा आधुनिक हिन्दी कविता में परम्परा और नवीनता
नगेन्द्र –सुमित्रानन्दन पन्त
जगदीष गुप्त – महादेवी वर्मा
रामचन्द्र "ाक्ल– हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक कविता खण्ड)
रमे"ा चन्द्र "ााह– छायावाद की प्रासंगिकता
प्रेम"ांकर– प्रसाद का काव्य
नन्ददुलारे वाजपेयी– हिन्दी साहित्य : बीसवीं "ाताब्दी
"ाचीरानी गुर्टू, सं0– महादेवी
देवराज –छायावाद का पतन
नामवर सिंह– छायावाद
नामवर सिंह– आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां
नरे"ा मेहता – अरण्या
कुँवर नारायण – तट पर हूँ पर तटस्थ नहीं (भेंटवार्ताएँ)
कुँवर नारायण – आज और आज से पहले
कुँवर नारायण – वाजश्रवा के बहाने

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या : **PGHND DMT 304** पाठ्यक्रम : **भाषा विज्ञान**

सेमेस्टर– 03 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

पाठ्यक्रम लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- भाषा मानव जीवन का सर्वोच्च साधान है। भाषा के बिना विकास की कोई भी प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती है।
- इस पाठ्क्रम का उद्देश्य है छात्रों को भाषा के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्षों से परिचय कराते हुए उसके इतिहास, विकास और स्वरूप की जानकारी देना।
- उसके इतिहास, विकास और स्वरूप की जानकारी देना।
- छात्र भाषा के अंग, प्रकार्थ और उत्पत्ति संबंधी विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई–1

- हिंदी भाषा : उद्भव और विकास भाषा उत्पत्ति के सिद्धांत
- हिंदी बोलियों का परिचय
- भाषा : परिभाषा, तत्त्व, अंग, प्रकृति और विशेषताएं, भाषा परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं

इकाई–2

- भाषाविज्ञान – परिभाषा एवं स्वरूप, भाषा विज्ञान के अंग, भाषा विज्ञान का इतिहास –भारतीय एवं पाश्चात्य, भारतीय भाषा चिन्तक, पाश्चात्य भाषा चिन्तन के प्रमुख स्कूल, प्रमुख अध्ययन–पद्धतियां

इकाई–3 ध्वनि विज्ञान (Phonetion) एवं स्वनिम विज्ञान (Phonemis)

- ध्वनि विज्ञान क्या है? ध्वनि विज्ञान की उपयोगिता, फोनोलॉजी और फोनेटिक्स में अंतर, ध्वनि उत्पत्ति ओर श्रवण।
- स्वनिमविज्ञान और स्वनिम, के विभिन्न नाम और स्वरूप, स्वनिम की परिभाषा स्वनिम (फोनीय) की विशेषताएं, संस्वन की विशेषताएं, ध्वनि और स्वनिम में अंतर, स्वनिम और संस्वन' (ग) ध्वनि परिवर्तन के कारण– (आभ्यंतर कारण, बाह्य कारण) ध्वनि परिवर्तन–कारण, एवं दिशाएं।

इकाई–4 पद विज्ञान (Morphology), वाक्य एवं अर्थ विज्ञान

- पद और वाक्य, पद और शब्द, पद और सम्बन्ध तत्व क प्रकार रूपिम विज्ञान या रूपग्राम विज्ञान, रूपिम या रूपग्राम, संरूप।
- वाक्य विज्ञान–वाक्य का स्वरूप, पद और वाक्य, वाक्य की परिभाषा, वाक्य के अनिवार्य तत्व, वाक्यों के प्रकार एवं वाक्यों का विभाजन।
- अर्थ विज्ञान– नामकरण, इतिहास, अर्थ का महत्व, अर्थ का लक्षण शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, अर्थ परिवर्तन की दिशाएं एवं अर्थ परिवर्तन के कारण

इकाई–5 विश्व भाषाओं का अध्ययन एवं वर्गीकरण–

- विश्व की भाषाएं, विश्व भाषाओं के वर्गीकरण का आधार,
- विश्व भाषाओं का आकृति मूलक वर्गीकरण
- विश्व भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण।

सहायक ग्रंथ :

- भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
- सामान्य भाषाविज्ञान– बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, भारती भंडार, इलाहाबाद

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.

- भाषा और समाज – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान – देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद
- भारत की भाषा समस्या – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- संपर्क भाषा हिंदी – सं0 सुरेश कुमार, ठाकुर दास, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
- राजभाषा हिंदी : प्रचलन और प्रसार – डॉ0 रामेश्वर प्रसाद, अनुपम प्रकाशन, पटना
- नागरी लिपि : हिंदी और वर्तनी – अनंत चौधरी, दिल्ली माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली
- समसामयिक हिंदी में रूपस्वानिमिकी – सुधाकर सिंह

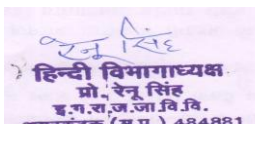

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या PGHND DMT 305 पाठ्यक्रम आदिवासी हिन्दी साहित्य

सेमेस्टर–03 क्रेडिट : 02 पूर्णांकः 50

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः

आदिवासी आंदोलन की अवधारणा से परिचित कराना
आदिवासी हिन्दी साहित्य के दर्शन, विचारधारा एवं तत्त्वों से अवगत कराना
आदिवासी हिन्दी साहित्य के विविध विधाओं और उसके सरोकारों की आलोचना, प्रवृत्ति एवं वैशिष्ट की समझ विकसित कराना
हिन्दी साहित्य के विकास में आदिवासी साहित्य के योगदान से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद विद्यार्थी यह जान पाएंगे

आदिवासी साहित्यआंदोलन के उदय की पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रयोजनएवं इतिहास को समझ पाएंगे ।
हिंदी आदिवासी साहित्य आंदोलन की सैद्धांतिकी एवं वैचारिकी को समझ पाएंगे ।
आदिवासी, आदिवासी चेतना एवं आदिवासी साहित्य के आशय को समझ सकेंगे ।
हिंदी आदिवासी साहित्य के प्रमुख रचनाकारों एवं उनके लेखन की विविध छवियों से परिचित हो सकेंगे ।
हिंदी आदिवासी साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों की प्रमुख विधाओं – आत्मकथा, कविता, कथा साहित्य, नाटक और आलोचना के चयनित पाठ का अध्ययन कर सकेंगे ।
हिंदी आदिवासी लेखन के वैशिष्ट्य एवं सौन्दर्यबोध को परख सकेंगे ।

अध्ययन के विषयः

इस पाठ्यक्रम में इन बिन्दुओं आदिवासी का आशय, आदिवासी की अवधारणा, आदिवासी समाज का संघर्ष, आदिवासी समाज की सांस्कृतिक वैशिष्ट्य और उसका बदलता स्वरूप, समकालीन आदिवासी प्रश्न, आदिवासी दर्शन, भारतीय समाज और आदिवासी समाज, आदिवासी अस्मिता व अस्तित्व का सवाल, आदिवासी समाज के विकास की समस्याएंः चुनौतियां एवं संभावनाएं साहित्यिक वैशिष्ट्य, संवेदना एवं सरोकार का अध्ययन अपेक्षित है। इसके आलोक में निम्न पाठ्य का अध्ययन किया जाना चाहिए।

निर्धारित रचनाकारः

इकाई–1 आदिवासी कविताः

निर्मला पुतुल– नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द, अपने घर की तलाश में, बेघर सपने

सरिता बड़ाईक– नन्हें सपनों का सुख,

सावित्री बड़ाईक– पत्तल भर भात और गाने की आजादी, पगडंडियों के पहरेदार, वापसी

इकाई–2 आदिवासी कथा साहित्य :

कहानी– रामदयाल मुंडा– बिरं का नया खेल, रूपलाल बेदिया– धर्म के चौराहे पर इंसान

राज केरकेट्टा– पगहा जोरी जोरी रे घाटो, एलिस एक्का– धरती लहलहायेगी..

उपन्यास– महुआ माजी– मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ

मंगल सिंह मुडा– छैला संदु

इकाई–3 आदिवासी कथेतर गद्य

आदिवासी वृतांत– पुरखा लड़ाके (सं.वंदना टेटे)

जयपाल सिंह मुंडा– लो बिर सेंदरा

प्रायोगिक :

दिए गये पाठ्यक्रम के आधार पर प्रायोगिक कार्य सम्पादित किया जायेगा। जिसे अधिन्यास (असाइन्मेंट) और प्रस्तुतिकरण पत्र के रूप में छात्र प्रस्तुत करेंगे।

सहायक ग्रंथः

रामदयाल मुंडा– आदिधरम
– आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल
श्यामाचरणदुबे– मानव और संस्कृति
वीरभारत तलवार– झारखंड के आदिवासियों के बीच
शैलेन्द्र महतो– झारखंड की समरगाथा
कुमार सुरेश सिंह– बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन
नदीम हसनैन– जनजातीय भारत
केदारप्रसाद मीणा – क्रांतिकारी आदिवासी –आजादी के लिए आदिवासियों का संघर्ष
–आदिवासी समाज, साहित्य और राजनीति
गया पांडे– भारतीय जनजातीय संस्कृति
रमणिका गुप्ता– आदिवासी स्वर और नई शताब्दी
लाला जगदलपुरी– बस्तर इतिहास एवं संस्कृति
ब्रह्मदेव शर्मा– आदिवासी स्वशासन
–आदिवासी विकास
अमर्त्य सेन– आर्थिक विकास और स्वातंत्र्य
जसप्रीत बाजवा– आदिवासी स्वर
विनोद कुमार– आदिवासी संघर्ष गाथा
एल पी विद्यार्थी, बीके राम बर्मन– दि ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया
एस सी राय– दि मुंडाज एंड देयर कंट्री
के एस सिंह– द शिड्यूल्ड ट्राइब्स
रमेशचंद्र मीणा– आदिवासी विमर्श
रमणिक गुप्ता– आदिवासी विकास से विस्थापन
आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करते
वंदना टेटे– आदिवासी साहित्यः परंपरा और प्रयोजन
अनुज लुगुन– आदिवासी अस्मिता–प्रभुत्व और प्रतिरोध
रसाल सिंह, बन्ना राम मीणा– आदिवासी अस्मिता वाया कथा साहित्य
प्रो. श्रवण कुमार मीणा– आदिवासी कहानी विविध संदर्भ
– समकालीन विमर्श बदलते परिदृश्य

पत्रिका–
युद्धरत आम आदमी का आदिवासी विशेषांक
वाङ्गमय– आदिवासी विशेषांक
अरावली उद्घोष
आदिवासी विमर्श

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो. रेनू सिंह
इ.ग.रा.ज.जा.वि.वि.